B.Ed. IInd year

Knowledge Language & Curriculum

TOPIC :- अन्तर-विषय सहसम्बन्ध

* अन्तर-विषय सहसम्बन्ध के प्रकार *

- लम्बीय सहसम्बन्ध
- क्षैतिज सहसम्बन्ध

1. लम्बीय सहसम्बन्ध

इस प्रकार के सहसम्बन्ध मे किसी विषय के तथ्यो एवं प्रसंगों को बोधगम्य बनाने के लिए उसी विषय के अन्य मिलते-जुलते तथ्यो एवं प्रसंगों के साथ उल्लेख किया जाता है। भाषा की शिक्षा मे गद्य पाठ का शिक्षण करते समय व्याकरण और रचना आदि का सहसम्बन्ध बहुत ही सहजता से स्थापित किया जा सकता है।

2. क्षैतिज सहसम्बन्ध

इस प्रकार के सहसम्बन्ध मे एक विषय का दूसरे विषय से सहसम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इसमे एक विषय के ज्ञान का प्रयोग दूसरे विषय को समझने के लिए किया जाता है। इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, और अर्थशास्त्र के शिक्षण मे सहसम्बन्ध सुगमता पूर्वक स्थापित किया जा सकता है।

इस प्रकार का सहसम्बन्ध योजनाबद्ध और आकस्मिक दोनो रूपो मे हो सकता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

अन्तर-विषय सहसम्बन्ध-कैसे
(Inter-Subject Correlation - How ?)

1. भाषा और इतिहास मे ।
2. भाषा और भूगोल मे ।
3. भाषा और नागरिकशास्त्र मे ।
4. भाषा और विज्ञान मे ।
5. भाषा और गणित मे ।
6. भाषा और कला मे ।
7. भाषा और मनोविज्ञान मे ।
8. हिन्दी भाषा और विभिन्न विधाओं मे ।
   - कविता, गद्य, व्याकरण, नाटक, कहानी, उपन्यास, जीवनी संस्मरण आदि मे ।

* अन्तर-विषय सहसम्बन्ध के लाभ *

⇒ ज्ञान की अखण्डता तथा एकता का ज्ञान कराना ।
⇒ विषयो का स्पष्ट होना ।
⇒ विशिष्टीकरण के दोषो को दूर करना ।
⇒ ज्ञान का बालको के जीवन मे स्थायी बना जाना ।
⇒ बालको का सर्वांगीण विकास करना ।
⇒ विषयो का गहराई के साथ ज्ञान प्राप्त करना ।
⇒ विषयो को रोचक बनाना ।
⇒ पाठ्यक्रम के भार को कम करना ।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

=> सम्पूर्ण पाठ को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करना।
=> व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना तथा समय की बचत करना।
=> अनुभवों का सामान्यीकरण, तथा शिक्षकों के अनुभवों को व्यक्त करना
=> शिक्षकों को विषय सम्बन्धी अधुनातम ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करना।

* अन्तर-विषय सहसम्बन्ध की सीमाएँ *

=> बड़ी कक्षाओं में प्रयोग नहीं हो सकता।
=> एक ही विधि का प्रयोग सभी शैक्षिक परिस्थितियों में नहीं।
=> सांस्कृतिक विषयों तथा किसी विषय का गहन अध्ययन सम्भव नहीं।
=> सभी शिक्षक प्रत्येक स्थिति में इसका सफलतापूर्वक प्रयोग नहीं कर सकते।

* अन्तर-विषय सहसम्बन्ध में सावधानियाँ *

=> सहसम्बन्ध स्थापित करते समय शिक्षक को इसके लिए सचेत रहना चाहिए कि पाठ्यवस्तु अप्रासंगिक होकर मूल पाठ से दूर न चली जाए।
=> हर दृष्टि से सहसम्बन्ध सरल और स्वाभाविक होना चाहिए।
=> बालकों की रुचियों, मानसिक स्तर और बौद्धिक स्तर के अनुरूप ही अन्तर-विषय सहसम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए।
=> सहसम्बन्ध उन्हीं विषयों के साथ किया जाना चाहिए। जिनमें सरलता, स्पष्टता और बोधगम्यता हो।
=> अन्तर-विषय सहसम्बन्ध स्थापित करते समय बालकों की क्रियाशीलता और सृजनात्मकता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
=> पूर्व नियोजित और आकस्मिक दोनों विधियों से सहसम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए।
=> शिक्षक को सहसम्बन्ध विषयों के लिए पहले से पूर्व सचेत होकर तैयारी कर लेनी चाहिए।

Thank you

by
Mr. Parveen Raj
Asst. Pro.
B.R.C. Deoband (SRC)